6
एक-दूसरे से प्रेम रखो

पहला यूहन्ना विश्वास की अनिश्चितताओं पर ज़ोर देता है। जीवन के बारे में इतना कुछ अनिश्चित है कि कई बार लगता है कि अगर न बदलने वाली कोई चीज़ है तो वह केवल बदलाव है। यह जानना आवश्यक है कि कुछ बातें निश्चित हैं। हम उनके नाम नहीं बता सकते पर वे हमेशा सही होती हैं। उन निश्चितताओं में ये तथ्य हैं कि मसीही लोग पिता के साथ संगति का आनन्द ले सकते हैं और पाप पर जय पा सकते हैं।

इस पाठ में हम एक और निश्चितता पर विचार करना चाहते हैं और वह यह है कि हमें ''एक-दूसरे से प्रेम रखना'' चाहिए। पूरी पत्री में यूहन्ना ने प्रेम की आवश्यकता पर ज़ोर दिया है। KJV में ''प्रेम''[1] शब्द संज्ञा या क्रिया रूप में 1 यूहन्ना में लगभग पैंतालीस बार मिलता है![2] ''प्रेम के प्रेरित'' यूहन्ना ने यूहन्ना अर्थात ''प्रेम की पत्री'' लिखी। 1 यूहन्ना 4 में विशेष रूप से प्रेम पर ज़ोर दिया गया है। पन्द्रह आयतों (आयतें 7-21) में यूहन्ना ने ''प्रेम'' शब्द का इस्तेमाल उन्नतीस बार किया। इस भाग में तीन आयतों को छोड़कर हर आयत में कम से कम एक बार आता है।[3] आम तौर पर 1 कुरिन्थियों 13 को ''बाइबल का प्रेम का अध्याय'' माना जाता है, पर 1 यूहन्ना 4 इस शीर्षक का हकदार हो सकता है।

अध्याय 4 में यूहन्ना ने दो उद्देश्यों को पूरा किया: उसने झूठी शिक्षा के विरुद्ध चेतावनी दी और फिर भाइयों को एक-दूसरे के साथ प्रेम रखने के लिए प्रोत्साहित किया। परमेश्वर को भाने के लिए वे दोनों शर्तें अच्छा आधार देती हैं: हमें डॉक्ट्रिन में मज़बूत होना और एक-दूसरे से प्रेम रखना आवश्यक है!

अध्याय 4 आरम्भ झूठी शिक्षा के बारे में इस चेतावनी के साथ होता है।

> [1]हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो: वरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं। [2]परमेश्वर का आत्मा तुम इसी रीति से पहचान सकते हो, कि जो कोई आत्मा मान लेती है, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है वह परमेश्वर की ओर से है। [3]और जो कोई आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं; और वही तो मसीह के विरोधी की आत्मा है; जिसकी चर्चा तुम सुन चुके हो, कि वह आनेवाला है: और अब भी जगत में है। [4]हे बालको, तुम परमेश्वर के हो: और तुमने उन पर जय पाई है; क्योंकि जो तुम में है, वह उससे जो संसार में है, बड़ा है। [5]वे संसार के हैं, इस कारण वे संसार की बातें बोलते हैं; और संसार उन की सुनता है। [6]हम परमेश्वर के हैं: जो परमेश्वर को जानता है, वह हमारी सुनता है; जो परमेश्वर को नहीं जानता वह हमारी नहीं सुनता; इसी प्रकार हम सत्य की आत्मा और भ्रम की आत्मा को पहचान लेते हैं।

झूठे शिक्षक या झूठे भविष्यवक्ता लोगों को इस शिक्षा से भरमा रहे थे कि यीशु मसीह देह में

होकर नहीं आया। स्पष्टतया वे परमेश्वर के आत्मा द्वारा बात करने का दावा करते थे, पर वे आत्मा से बात नहीं कर रहे थे। उनका संदेश उस संदेश से अलग जो परमेश्वर के आत्मा की ओर से मिला था। इसलिए उस आत्मा ने जिसके द्वारा वे बातें करते थे, दिखा दिया कि वे मसीही विरोधी हैं, यानी वे मसीह के विरोधी थे, उन्हें तैयार श्रोता मिल गए थे क्योंकि ''संसार उनकी सुनता [था]'' (आयत 5)। यूहन्ना के पाठक उनकी सुनने वाले लोगों में से नहीं थे। उन्हें उससे जो उसने बताया था पता चल सकता था कि कोई वक्ता ''सत्य के आत्मा'' से बोल रहा है या ''झूठे के आत्मा'' से।

इन झूठे शिक्षकों के विरुद्ध चेतावनी देने के बाद, यूहन्ना उस विषय में अर्थात हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम और एक-दूसरे के लिए हमारे प्रेम पर लौट आया जो उसके मन को प्रिय था।

अध्याय के इस भाग में यूहन्ना का ज़ोर इस बात पर था कि हमें भाइयों से प्रेम रखना चाहिए। उसने इसके कई कारण बताए कि हमें ''एक-दूसरे से प्रेम'' रखना चाहिए।

हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम का कारण (1 यूहन्ना 4:7-11)

इस पाठ का शीर्षक ''एक-दूसरे के लिए प्रेम'' इस शृंखला के अन्य शीर्षकों से मेल नहीं खाता। वे उन आशिषों पर ज़ोर देते हैं, जो मसीही होने के नाते हमें मिली हैं: ''एक-दूसरे से प्रेम रखो'' हमारी ज़िम्मेदारी से जुड़ा है। परन्तु प्रेम एक आशीष है। यूहन्ना ने हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम की बात की। परमेश्वर का प्रेम 1 यूहन्ना में दी गई निश्चितताओं में से एक है।

परमेश्वर के प्रेम का तथ्य। अपनी पत्री और विशेषकर 1 यूहन्ना 4 में यूहन्ना ने प्रेम के बारे में बहुत सी बातें कहनी थी; पर उसने प्रेम पर इस भाग का आरम्भ वहीं से किया, जहां से प्रेम की कहानी शुरू होती है: ''हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है: और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है'' (1 यूहन्ना 4:7)। बार-बार यूहन्ना ने कहा कि एक-दूसरे से हमारे प्रेम रखने का यही कारण है कि परमेश्वर ने हम से प्रेम किया:

> परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8; 4:16 भी देखें)।
>
> जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इससे प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं (1 यूहन्ना 4:9)।
>
> प्रेम इस में नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने-अपने पुत्र को भेजा (1 यूहन्ना 4:10; देखें 3:1)।

फिर उसने सिरे की बात की: ''हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए'' (1 यूहन्ना 4:11)। बाद में अध्याय में उसने लिखा ''हम इसलिए प्रेम करते हैं कि पहिले उसने हमसे प्रेम किया'' (1 यूहन्ना 4:19)।

इसलिए एक-दूसरे से हमारे प्रेम रखने की मुख्य प्रेरणा परमेश्वर जैसा बनने की है। परमेश्वर प्रेम यानी परमेश्वर की मुख्य विशेषता उसका प्रेमी स्वभाव है। प्रेम को दिखाकर हमें

परमेश्वर के जैसे बनना है। क्या आपका जीवन ऐसा है कि यदि कोई आपके चरित्र, आपके स्वभाव के बारे में संक्षेप में बताने की कोशिश करे तो वह कह पाए ''फलां-फलां आदमी [या औरत] से प्रेम है।''[1]

परमेश्वर का प्रेम कैसा था?

परमेश्वर के प्रेम की विशेषता। मुख्य बात यह है कि *परमेश्वर का प्रेम अपने आप दिखाई* दिया (1 यूहन्ना 4:9)। परमेश्वर ने स्वर्ग में बैठे-बैठे यह पत्र नही भेजा, ''मैं तुम से प्रेम करता हूं।'' हमारे लिए उसने अपना प्रेम न केवल अपनी बात कहकर बल्कि अपनी बात को पूरा करके भी दिखाया। उसने हमारी खातिर मरने के लिए अपना पुत्र दे दिया। यूहन्ना ने हमें इसी प्रकार से करने की बात समझाई।

> पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है? हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें (1 यूहन्ना 3:17, 18)।

मसीही लोगों के लिए मसीह में अपने भाई-बहनों के लिए प्रेम दिखाना और उन्हें गले लगा कर या ''पवित्र चुम्बन'' के साथ सलाम करना हो तो अच्छा है ही, पर इससे भी अच्छा एक-दूसरे की सहायता करके प्रेम को दिखाना है। कई मसीही जो बार-बार ''आई लव यू'' या ''तुझसे प्रेम करता हूं'' कहते रहते हैं, अपने प्रेम को दिखाने के लिए कुछ नहीं करते। अन्य लोग जो ''आई लव यू'' या ''तुझसे प्रेम करता हूं'' नहीं कहते हैं, वे अपने भाइयों की सहायता खुले दिल से करके प्रेम को दिखाते हैं।

- यदि भोजन की आवश्यकता है तो वे भोजन देते हैं।
- यदि किसी को अपनी गाड़ी में ले जाना है तो वे खुशी से ले जाते हैं।
- यदि किसी को रुकने के लिए जगह चाहिए तो उनके घर के द्वार हमेशा खुले रहते हैं।
- यदि किसी बीमार के पास बैठने या दु:खी व्यक्ति के पास जाने की आवश्यकता हो तो वे मदद के लिए हाज़िर हैं।
- यदि किसी को पैसे चाहिए तो वे केवल इतना नहीं कहते ''और तुममें से कोई उन से कहे, कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो; पर जो वस्तुएं देह के लिए आवश्यक है वह उन्हें न दे, तो क्या लाभ'' (याकूब 2:16)। ज़रूरत के समय वे किसी साथी मसीही के लिए अपने दिलों के दरवाज़े बन्द नहीं करते (1 यूहन्ना 3:17), बल्कि वे उसकी आवश्यकताओं के लिए पैसे देकर सहायता करते हैं।

इन दो प्रकार के मसीहियों में से ''मैं तुझसे प्रेम करता हूं'' पर प्रेम को दिखाने के लिए कुछ न करने वाले और वे जिन्हें प्रेम को शब्दों में बयान करना कठिन लगता है पर दूसरों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, अपने भाई से वैसे ही प्रेम जैसे परमेश्वर चाहता है, कौन से हैं?

परमेश्वर का प्रेम केवल दिखाया ही नहीं या बल्कि यह अद्‌भुत रीति से दिखाया

गया: *परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम रखा और जगत से किया कि उसने हमारी खातिर और संसार के लिए अपना इकलौता पुत्र दे दिया।* हमें अपने भाइयों से इतना प्रेम रखने की आवश्यकता है कि हम उनके लिए मरने को भी तैयार रहें। 1 यूहन्ना 3:16 पर ध्यान दें, ''हमने प्रेम इसी से जाना, कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए।''

पहली सदी में मसीही लोगों के लिए एक दूसरे की खातिर मरना सचमुच आवश्यक होगा। यदि हम उस समय में होते तो हम भी उन अधिकारियों के अधीन होते जो आदेश देते थे कि मसीह में विश्वास करने वाले यदि यीशु के नाम का अनादर नहीं करते तो, वे मारे जाएं। मान लीजिए कि आपको पकड़ लिया जाता और आपके पड़ोसी गवाही देते हैं कि उन्हें पक्का पता है कि आप मसीही हैं। फिर जज कहता है, ''तुम यीशु की आराधना करने वाले पाए गए हो, इसलिए दण्ड के दोषी हो। तुम्हें मृत्युदण्ड दिया जाता है पर यदि तुम हमें अपनी कलीसिया में और मसीही लोगों के नाम बता दो तो हम तुम्हें माफ़ कर देंगे, तुम्हें छोड़ दिया जाएगा और तुम यीशु की आराधना करना जारी रख सकते हो। बस हमें उनके नाम बता दो।'' आप क्या करते? क्या आप मसीह में भाइयों और बहनों के नाम बता देते ताकि आप ज़िंदा रह सकें या अपने सताने वालों को वह बताने से इनकार करके मौत को गले लगाते? उस ज़माने में, भाइयों के लिए अपने प्रेम को दिखाने के लिए आप को सचमुच में उनके लिए मरना पड़ सकता था।

कई जगहों पर आज वैसा ही दृश्य हो सकता है। यदि हम अपनी बुलाहट के प्रति ईमानदार हैं, यदि हम वैसे ही प्रेम करते हैं जैसे परमेश्वर करता है, तो हमें अपने भाइयों के लिए मरने को तैयार रहना आवश्यक है।

इसके अलावा *परमेश्वर का प्रेम इस बात में दिखाया गया कि यीशु मरा-धर्मियों के लिए नहीं, बल्कि पापियों के लिए, जो उद्धार पाने के हकदार नहीं थे।* यूहन्ना ने कहा, ''प्रेम इस में नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिए अपने-अपने पुत्र को भेजा।'' परमेश्वर ने हम से इसलिए प्रेम नहीं किया कि हम ने उससे प्रेम किया बल्कि उसने हम से प्रेम इस तथ्य के बावजूद किया कि हम पापी हैं (रोमियों 5:8)। उसने अप्रिय लोगों से प्रेम किया।

यदि हम वैसे ही प्रेम करना चाहते हैं जैसे परमेश्वर करता है, तो हमें अप्रिय लोगों से प्रेम रखने की इच्छा करनी है। यह कठिन हो सकता है! ऐसे लोगों से जो पसन्द हैं, प्रेम रखना आसान है परन्तु क्या हम उन लोगों से प्रेम रखने की बात कैसे सोच सकते हैं जो नापसन्द है यानी ऐसे लोग जो सनकी हैं, लोग जो कृतघ्न हैं, लोग जिनमें ऐसी बातें पाई जाती हैं कि हमें पसन्द नहीं हैं। हम उन लोगों से प्रेम करना कैसे सीख सकते हैं जो हमारा आदर या हमें पसन्द नहीं करते? हम अपने शत्रुओं से कैसे प्रेम कर सकते हैं?

इस प्रश्न का एक उत्तर है कि बाइबल के अनुसार प्रेम मुख्यतया किसी भावना की बात नहीं है। बल्कि बाइबल का प्रेम प्रियजनों के लिए जो सबसे बढ़िया है वह करने का निश्चय करना है। उदाहरण के रूप मे हम कलीसिया के बारे में सोच सकते हैं जिन से लगाव की भावना रखना हमारे लिए सबसे कठिन है। हम उनके बारे में जैसा ही *महसूस* करें पर हमें उनसे इस अर्थ में *प्रेम* रखना है कि उनके लिए जो भी बेहतर हो हम करें, उनके साथ करुणापूर्वक व्यवहार करें और उनके साथ धैर्य से पेश आएं (देखें 1 कुरिन्थियों 13:4-7)।

यह मुख्य सच्चाई हमें याद रखनी है कि अपने भाइयों के लिए प्रेम केवल एक विकल्प नहीं है बल्कि यह एक आवश्यकता है! 1 यूहन्ना 3:11 पर विचार करें: ''क्योंकि जो समाचार तुम ने आरम्भ से सुना, वह यह है, कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें।'' फिर 1 यूहन्ना 3:23 पर ध्यान दें: ''और उसकी आशा यह है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें और जैसा उसने हमें आज्ञा दी है उसी के अनुसार आपस में प्रेम रखें।'' 1 यूहन्ना 4:21 भी पढ़ें: ''और उससे हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे।'' आपस में प्रेम रखना एक आज्ञा है![4] यदि आप पूछना चाहते हैं, ''मैं पुराने भाई आलोचक से कैसे प्रेम रख सकता हूं?'' इसका उत्तर यह है कि आपको उससे प्रेम करने का ढंग पता लगाना होगा! प्रेम कुछ ऐसा नहीं है जो आप कर *सकते* हैं बल्कि प्रेम कुछ ऐसा है जो आपको *करना* है।

परमेश्वर का प्रेम जो योग्य नहीं थे उनके लिए मरने को अपने पुत्र को देकर दिखाया गया प्रेम था और एक दूसरे के लिए हम से भी यही प्रेम रखने को कहा जाता है!

क्योंकि यदि हम प्रेम रखते हैं, तो परमेश्वर हममें वास करेगा (1 यूहन्ना 4:12-16)

[12]परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हममें
बना रहता है; और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है। [13]इसी से हम जानते हैं, कि
हम उसमें बने रहते हैं, और वह हम में; क्योंकि उसने अपने आत्मा में से हमें दिया है।
[14]और हमने देख भी लिया और गवाही देते हैं कि पिता ने पुत्र को जगत का उद्धारकर्त्ता
करके भेजा है।

[15]जो कोई यह मान लेता है, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है; परमेश्वर उसमें बना रहता
है, और वह परमेश्वर में। [16]और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उसको हम जान गए,
और हमें उसकी प्रतीति है; परमेश्वर प्रेम है: और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर
उसमें बना रहता है।

मसीही होने के नाते परमेश्वर के साथ संगति अर्थात हमारा उसमें वास और उसका हम में वास हमारे जीवन का एक बड़ा लक्ष्य है। हमें कैसे पता चल सकता है कि हमारे पास वह संगति है? 1 यूहन्ना 4:12-16 के अनुसार हम इन कारणों से जान सकते हैं कि हमारे पास ऐसी संगति है:

(1) हम एक दूसरे से प्रेम रखते हैं (4:12; देखें आयत 16)।
(2) उसने हमें अपना आत्मा दिया है (4:13)।
(3) हम प्रेरितों की गवाही पर विश्वास करते और हम ने मान लिया है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है (4:14, 15)।
(4) हम अपने लिए परमेश्वर के प्रेम को जानते हैं (4:16)।

एक ढंग जिससे हम जान सकते हैं कि परमेश्वर हम में है और हम उसमें वह यह है कि

हम ''आपस में प्रेम रखें।'' तो फिर यदि हम मसीह में आपस में अपने भाइयों और बहनों से प्रेम नहीं रखते तो परमेश्वर के साथ हमारी संगति नहीं है।

क्योंकि प्रेम से आत्मविश्वास आएगा (1 यूहन्ना 4:17, 18)

[17]इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ, कि हमें न्याय के दिन हियाब हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं। [18]प्रेम में भय नहीं होता, बरन सिद्ध प्रेम भय को दूर करता देता है, क्योंकि भय से कष्ट होता है, और जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ।

हम ''एक बड़ा दिन आने वाला है'' जैसे गीत गाते हैं। बहुत से लोग यह जानते हुए कि न्याय का दिन आ रहा है, उस दिन से डरते हैं परन्तु यीशु ने कहा कि डरने की आवश्यकता नहीं है। उसने कहा कि हमें ''न्याय के दिन हियाव'' (4:17) हो सकता है और फिर आगे कहा कि ''प्रेम में भय नहीं होता वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है'' (4:18क)।

यह ''सिद्ध प्रेम'' क्या है, जो भय को दूर करके न्याय के दिन का सामना करने का हियाव दे देता है? यह वह प्रेम है जो ''सिद्ध किया हुआ'' है (1 यूहन्ना 4:17; देखें 2:5)। जब हम एक दूसरे से प्रेम रखते हैं ''उसका प्रेम हम में सिद्ध होता है'' (4:18; देखें आयत 12)। ''सिद्ध होने'' का विचार ''पूर्ण'' होने जैसा है। यूहन्ना कह रहा था कि जब हम मसीही लोगों से प्रेम करने में बढ़ते हैं तो परमेश्वर का प्रेम पूर्ण होता है।[5]

शायद हम प्रेम में मनुष्य के साथ परमेश्वर के व्यवहारों को हम शायद प्रेमी होने के अपने बच्चों को परिक्षण देने की कोशिश के मानवीय पिता के प्रयास से मिला सकते हैं। हम ज़बानी तौर पर अपने बच्चों को एक-दूसरे से प्रेम रखना, भला करना और दया करना सिखा सकते हैं। दूसरों के साथ भला करने पर उन्हें इनाम देकर और दूसरों के साथ दुर्व्यवहार करने पर उन्हें दण्ड देकर हम अपनी शिक्षा को लागू कर सकते हैं। अपने बच्चों को नमूना देकर सिखाने की कोशिश करते हुए कि प्रेम करने का क्या अर्थ है, हम अपने जीवनों में परोपकार की विशेषता लाने की चेष्टा कर सकते हैं। इसके बावजूद हमारा कार्य पूर्ण नहीं है। हमारा काम तब तक पूरा नहीं होता जब तक हम अपने बच्चों को अपनी इच्छा से दूसरों से प्रेम करते नहीं देखते। जब हम ऐसा देखते हैं तो हम कुछ सन्तुष्टि महसूस कर सकते हैं। हम सोच सकते हैं, ''उनके लिए मेरा प्रेम सिद्ध [या पूर्ण] हुआ।'' इसी प्रकार से एक अर्थ में बेशक परमेश्वर भी यह देखकर कि हमारे लिए उसका प्रेम दूसरों के लिए दिखाए गए प्रेम में हमारे जीवनों में फल लाता है, सन्तुष्ट होता है।

इसके विपरीत यदि हम एक दूसरे से प्रेम नहीं रख पाते तो हम में परमेश्वर का प्रेम सिद्ध नहीं हुआ। यह अधूरा है। इसने वह काम नहीं किया जो उसने चाहा था कि यह करे।

न्याय के दिन के बारे में आपको कैसा लगता है? क्या आपको हियाव है या आपको डर लगता है? परमेश्वर की संतान के रूप में यदि आप दूसरों के लिए प्रेम रखते हैं तो आपको डरने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि ''सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है।''

क्योंकि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं (1 यूहन्ना 4:19-21)

[19]हम इसलिए प्रेम करते हैं, कि पहिले उसने हमसे प्रेम किया। [20]यदि कोई कहे, कि मैं

परमेश्वर से प्रेम रखता हूं; और अपने भाई से बैर रखे; तो झूठा है: क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता। [21]और उससे हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे।

परमेश्वर के प्रेम के लिए सबसे पहले हमारी प्रतिक्रिया परमेश्वर के लिए प्रेम की होनी चाहिए। जिस प्रकार से यूहन्ना ने हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम पर ज़ोर दिया, वैसे ही उसने उसके लिए हमारे प्रेम की भी बात की। यूहन्ना ने उन लोगों की बात की जिन्होंने कहा, ''मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूं'' (आयत 20), जैसे कि उस समय मसीह लोग पिता के लिए अपने प्रेम की बात करते थे (1 यूहन्ना 2:15; 4:21; 4:10; 5:1-3 भी देखें)।

यदि हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, तो हमें अपने भाइयों से कैसे व्यवहार करना चाहिए? तथ्य इस प्रकार हैं। (क) सभी मानवीय जीव परमेश्वर के स्वरूप पर बनाए गए हैं। (ख) परमेश्वर सब लोगों से प्रेम करता है, उन से भी जो प्रेम किए जाने के योग्य न हों। (ग) जो लोग परमेश्वर की संतान हैं, परमेश्वर द्वारा उन से विशेष रूप में प्रेम किया जाता और उन्हें आशीष दी जाती है और उनमें परमेश्वर की विशेषताएं पाई जाती हैं: ''जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं'' (1 यूहन्ना 4:17)। (घ) जो लोग मसीही बन गए हैं वे मसीह में भाई और बहनें हैं, जिनके लिए हमें मरने को तैयार रहना चाहिए (1 यूहन्ना 3:16)! तो फिर कोई यह दावा कैसे कर सकता है कि ''मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूं'' पर अपने भाई से घृणा रखता हूं (1 यूहन्ना 4:19, 20)? हम इस प्रकार कह सकते हैं: तुम सबसे पहली ओर बड़ी आज्ञा ''तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे ... से प्रेम रख'' को तब तक नहीं मान सकते जब तक तुम ने दूसरी आज्ञा ''अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख'' को न माना हो (मत्ती 22:37-39)।

हमें क्या करना चाहिए? हमारे और दूसरों के लिए परमेश्वर के प्रेम के कारण, हमें उससे प्रेम रखना चाहिए; और हमारे उससे प्रेम रखने के कारण, हमें दूसरों से प्रेम रखना चाहिए। यूहन्ना ने इस बात की पुष्टि की, ''और उससे हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे'' (1 यूहन्ना 4:21)।

1 यूहन्ना 4:19-21, मत्ती 23 में यीशु की बातों का स्मरण है जहां यीशु ने शास्त्रियों और फरीसियों को कपटी कहकर डांटा था। उसने उनसे कहा था, ''तुम विधवाओं के घरों को खा जाते हो और दिखाने के लिए बड़ी देर तक प्रार्थना करते हो'' (मत्ती 23:14)। वे निर्धनों से दुर्व्यवहार करते थे, परन्तु साथ ही दिखावा करते थे कि वे बहुत धर्मी हैं। यीशु ने आगे कहा, ''तुम पुदीने और सौंफ और जीरे का दसवां अंश देते हो, परन्तु तुम ने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात न्याय, और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है'' (मत्ती 23:23)। क्या यूहन्ना कुछ ऐसा ही नहीं कह रहा था? शायद ये भाई लगातार कलीसिया में जाते, ज़ोर ज़ोर से प्रार्थना करते और दिल से गाते थे, यानी परमेश्वर के लिए अपने बड़े प्रेम का प्रचार करते थे। तौभी परमेश्वर के लिए प्रेम का उनका अंगीकार व्यर्थ था यदि वे इसके साथ ही एक दूसरे के साथ दुर्व्यवहार करते या अपने भाइयों की आवश्यकताओं को पूरा करने का इनकार करते! इस पर निशान लगा लें; इसे रेखांकित कर लें और इसे याद कर लें कि ''जो अपने भाई से जिसे प्रेम नहीं रखता जिसे

उसने देखा है [उसकी आवश्यकताओं को पूरा करके, उसकी सहायता करके], वह परमेश्वर से प्रेम नहीं रख सकता जिसे उसने देखा नहीं है!''[6]

सारांश

अन्त में, हमें अपनी आत्मा की स्थिति की समीक्षा करनी चाहिए। कई बार हम गाते हैं, ''अरासता हो मेरी जान।''[7] आपकी जान के साथ अच्छा क्या है? आपको कैसे मालूम? यदि आप विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र, देहधारी परमेश्वर है तो आपने अच्छा किया है। यदि आपने प्रभु की आज्ञाओं को माना और परमेश्वर की संतान बन गए हैं, तो आप उसमें आनन्द कर सकते और परमेश्वर को उसके अनुग्रह के लिए धन्यवाद दे सकते हैं, जिसने आपको परमेश्वर के साथ संगति और मसीह की देह में अन्य संतों के साथ संगति की अनुमति दी है। यदि क्रूस पर मसीह की मृत्यु के द्वारा आपका अपने पाप से उद्धार हो गया है, और यदि आप अपने प्रतिदिन के जीवन में पाप करने पर जय पाने की कोशिश कर रहे हैं, तो आप उस उद्धार के लिए जो परमेश्वर ने आपको दिया है उसकी स्तुति कर सकते हैं।

क्या इतना ही सब कुछ है? क्या हमें सही शिक्षा पर विश्वास करना, सुसमाचार की आज्ञा मानना, प्रभु की कलीसिया में अन्य चेलों के साथ संगति रखता, आराधना में परमेश्वर की स्तुति करना और अपने व्यक्तिगत जीवन में पाप से दूर रहने की तलाश करना ही काफ़ी है? क्या ये बातें इस बात की गारंटी के लिए काफ़ी हैं कि हमारी आत्माओं के साथ ''सब अच्छा,'' या कुछ और करना आवश्यक है?

स्पष्टतया विश्वास योग्य मसीही जीवन में और भी बातें हैं। मसीही लोगों के लिए एक दूसरे से प्रेम रखकर परमेश्वर के लिए प्रेम को दिखाना आवश्यक है; और उस प्रेम को केवल शब्दों में ही नहीं बल्कि कामों से दिखाना आवश्यक है। क्या आप अन्य मसीही लोगों के साथ अपने प्रेम को, अर्थात भाइयों के लिए अपने प्रेम को दूसरों की सहायता करके और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करके दिखा रहे हैं? यदि नहीं तो आपकी जान की स्थिति क्या है?

टिप्पणियां

[1]यूनानी शब्द *अगापे* के किसी रूप से अनुवाद किया गया। [2]यह गिनती रॉबर्ट यंग, *यंग'स एनेलिटिकल कंकॉर्डेंस टू द बाइबल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 622–23 पर आधारित है। [3]इन तीनों आयतों अर्थात 1 यूहन्ना 4:13–15 में ''प्रेम'' शब्द तो नहीं है, पर वे विचाराधीन विषय अर्थात मसीही लोगों के लिए परमेश्वर के प्रेम और एक दूसरे के लिए मसीही लोगों के प्रेम से सम्बन्द्ध है। [4]1 यूहन्ना 2:7–11; 3:11 भी देखें। [5]एक–दूसरे से प्रम रखने से आत्मविश्वास बढ़ता है; यूहन्ना ने कहा कि, ''हम जानते हैं कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुके हैं क्योंकि हम भाइयों से प्रम रखते हैं'' (1 यूहन्ना 3:14)। [6]यदि ''परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा'' (आयत 12), तो बाइबल में कुछ लोगों के लिए कैसे कहा जा सकता है कि उन्होंने उसे देखा? ''परमेश्वर आत्मा है'' (यूहन्ना 4:24), इस कारण शारीरिक आंखें उसे देख नहीं सकतीं। परिभाषा से ही आत्मा का अर्थ अदृश्य है। इसलिए यदि मनुष्य द्वारा परमेश्वर को देखे जाने की बात कही जाती है, तो उसने सचमुच परमेश्वर को नहीं देखा है। उसने परमेश्वर का प्रकटीकरण देखा है। बाइबल के समयों में परमेश्वर मनुष्यों पर अपने आप को अलग अलग तरह से प्रकट करता था। उदाहरण के लिए, कभी जलती हुई झाड़ी में या कभी मनुष्य के रूप में। यह प्रकटीकरण वास्तव में परमेश्वर नहीं (जो आत्मा है) बल्कि परमेश्वर का

प्रतिनिधित्व होता था। जॉन आर. डब्ल्यू. ने कहा, ''पुराने नियम के परमेश्वर के दर्शन मनुष्य के रूप में परमेश्वर के प्रकाशन थे यानी वे परमेश्वर के इस प्रकार दर्शन नहीं थे जैसे वह स्वयं हो'' (जॉन आर. डब्ल्यू, *दि एपिस्टल्स ऑफ़ जॉन,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960], 163)। [7]होराशियो जी. स्पेफोर्ड, ''इट इज़ वेल विद माई सोल,'' *सॉन्ग्स ऑफ़ फ़ेथ एंड प्रेज़,* संक. व संपा. आल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)।

''मसीह का विरोधी''

''मसीह विरोधी'' का अर्थ है कि ''मसीह के विरोधी।'' यूहन्ना अकेला लेखक नहीं, जिसने इस अभिव्यक्ति का इस्तेमाल किया; यह 1 यूहन्ना 2:18; 2:22; 4:3; और 2 यूहन्ना 7 में मिलता है। ये आयतें सिखाती हैं:

- कि यूहन्ना के पाठकों ने सुना था कि अन्तिम समय में मसीह का विरोधी आने वाला है (1 यूहन्ना 2:18)।
- कि कई मसीही विरोधी उठ खड़े हुए थे; इसलिए अन्तिम समय आ गया (1 यूहन्ना 2:18)।
- कि जो इनकार करता था कि यीशु ही मसीह है, वही मसीह, विरोधी था (1 यूहन्ना 2:22)।
- कि जिन्होंने नहीं माना कि यीशु देह मे होकर आया, वह मसीह विरोधी की आत्मा ही थी (1 यूहन्ना 4:3)।
- कि मसीह विरोधी संसार में उस समय था जब यूहन्ना ने लिखा (1 यूहन्ना 4:3)।
- कि झूठे शिक्षक और भरमाने वाले लोग मसीह विरोधी के बराबर हैं (2 यूहन्ना 7)।

मसीह के विरोधी के बारे में जिन तथ्यों से हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि वे केवल यही है पर टीकाकार आम तौर पर मसीह विरोधी को 2 थिस्सलुनीकियों 2:1-10 वाले ''पाप का पुरुष'' से मिलाते हैं, जो ''प्रभु के दिन'' के आने से पहले आएगा। इस व्याख्या के अनुसार यूहन्ना के समय में ''मसीह के विरोधी'' अन्तिम समय के मसीह विरोधी की आत्मा वाले हो सकते हैं।[1]

गाई एन. वुड्स का मानना था कि मसीह विरोध *''रोम का पोप''* है![2] गोयबल म्यूज़िक ने सुझाव दिया कि ''मसीह का विरोधी महामहिम के वचन में प्रकट की गई सच्चाई विपरीत अव्यवस्था का सिद्धांत या आत्मा'' है जो अलग-अलग समयों और स्थानों पर बुराई की अलग अलग किस्मों से स्पष्ट है।[3]

टिप्पणियां

[1]और जानकारी एफ. एफ. ब्रूस, *दि एपिस्टल्स ऑफ़ जॉन: इंट्रोडक्शन, एक्सपोज़िशन एंड नोट्स* (पृष्ठ नहीं: पिकरिंग: इंग्लिस, 1970; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986), 65-68, और डब्ल्यू. ई. वाइन, *दि एपिस्टल्स ऑफ़ जॉन: लाइट, लव, लाइफ़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1970), 35-36. [2]गाइ एन. वुड्स, *ए कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट एपिस्टल्स ऑफ़ पीटर, जॉन एंड ज्यूड* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1983), 242-43. [3]गोयबल म्यूज़िक, ''डिफिकल्ट पैसेजस इन 1, 2, 3 जॉन, नं. 1,'' *डेंटन लेक्चर्स* (1987), 385.